Dr. Vinod Baitha
Deptt. of Economics
Marwari college Darbhanga

पेरीटो का सिद्धान्त PARETO'S THEORY

विल्फ्रेडो पेरीटो इटली का एक इंजीनियर, समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री, राजनीतिशास्त्री और दार्शनिक थे। अर्थशास्त्र के क्षेत्र में इन्होंने कई महत्वपूर्ण योगदान किए। विल्फ्रेडो पेरीटो प्रथम अर्थशास्त्री थे जिन्होंने समाज कल्याण में वृद्धि अथवा कमी के मापन हेतु एक निश्चित मापदण्ड या कसौटी प्रस्तुत किया। इनका मापदण्ड या कसौटी अथवा जाँच सिद्धान्त विभिन्न नामों से पुकारा जाता है, जैसे पेरीटियन अनुकूलतम अथवा पेरीटो का सर्वकल्याण नियम, अथवा पेरीटो का सामाजिक अनुकूलतम अथवा पेरीटो की अनुकूलतम, अथवा सामान्य अनुकूलतम इनके द्वारा एक निश्चित मापदण्ड प्रस्तुत किया गया है।

1 पेरीटो की कल्याण कसौटी – कल्याण में वृद्धि हो या कमी इसकी जाँच के लिए पेरीटो ने जाँच के लिए कल्याण कसौटी दी है। कल्याण कसौटी को हम इन शब्दों में व्यक्त कर सकते हैं।

" आर्थिक कल्याण की दृष्टि से एक परिवर्तन को वांछनीय या सुधार लाने वाला तभी कहा जा सकता है जबकि वह परिवर्तन, बिना किसी को नुकसान पहुँचाए हुए, कम-से-कम एक व्यक्ति की स्थिति को अच्छा करता है।"

इस कसौटी की दो पहलु है।

i. यदि कोई आर्थिक क्रिया एक व्यक्ति अथवा वर्ग को हित पहुँचाती है और दूसरे व्यक्ति अथवा वर्ग को अहित नहीं पहुँचाती है तो वह क्रिया वांछनीय है।

ii. यदि किसी व्यक्ति या वर्ग को हित पहुँचाने में दूसरे व्यक्ति या वर्ग अहित हो रहा है चाहे वह अहित कितना ही न्यून क्यों न हो वह क्रिया वांछनीय नहीं कही जा सकती। उदाहरण के लिए अन्तर्राष्ट्रीय राजमार्ग जो लाखों व्यक्ति को लाभान्वित करेगा, को निर्मित करने में यदि कुछ लोगों को जबर्दस्ती विस्थापित करना पड़े तो हम निःसंकोच कह सकते हैं कि वांछनीय है तथा कल्याण में वृद्धि करेगी क्योंकि हम एक वर्ग के त्याग की दूसरे वर्ग की लाभ से तुलना नहीं कर सकते हैं।

2 सामाजिक अनुकूलतम या आदर्श — कल्याण की उपर्युक्त कसौटी या दशा के आधार पर समाज के लिए अधिकतम कल्याण की स्थिति अर्थात सामाजिक अनुकूलतम को निकाला अर्थात Deduce किया जा सकता है इन को निम्न शब्दों में व्यक्त किया गया है। " वितरण के किसी एक रूप को दिया हुआ मानकर एक सामाजिक अनुकूलतम वह स्थिति है जिसमें हरेक उत्पादन तथा विनिमय में कोई भी पुनर्संगठन किसी एक व्यक्ति को बिना दूसरे के हानि पहुँचाए अच्छी स्थिति में नहीं ला सकता" P.T.O

Scanned by CamScanner

तटस्थता वक्र तकनीक के शब्दों "अनुकूलतम समाज की वह स्थिति है जहाँ से किसी भी व्यक्ति को एक ऊँची तटस्थता वक्र पर ले जाना संभव नहीं है जब तक कि किसी दूसरे व्यक्ति को एक नीची तटस्थता वक्र रेखा पर न पहुँचा जाय।"

इस प्रकार पेरीटो की अनुकूलतम अवस्था अथवा अधिकतम सामाजिक कल्याण की अवस्था का प्रदर्शन रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

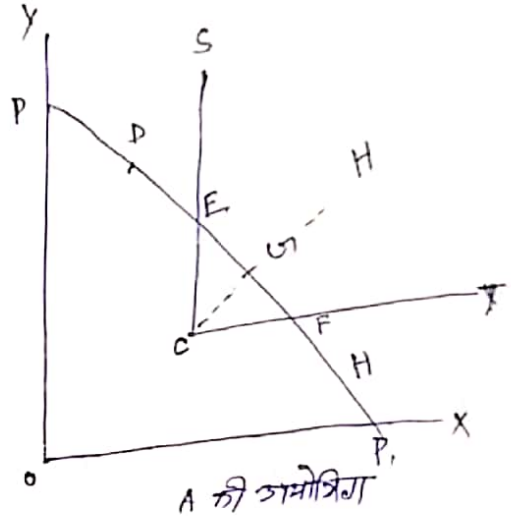

i. रेखा चित्र में X अक्ष पर A की क्रमवाचक उपयोगिता और Y अक्ष पर B की क्रमवाचक उपयोगिता प्रदर्शित की गई है।

ii. समाज में उत्पादन की एक दी हुई मात्रा के लिए PP, वक्र उपयोगिता संभावना वक्र है जो कि A और B के उपयोगिता स्तरों के विभिन्न संयोगों को निरूपित करता है

iii. जब हम PP, वक्र के नीचे स्थित C बिन्दु को लेते हैं

vi पेरीटियन कसौटी के अनुसार कोई भी परिवर्तन जो कि बिन्दु C से उपयोगिता सम्भावना वक्र PP, के बिन्दुओं E और F में से किसी पर भी ले जाया जाता है तो ऐसा चलन उपयोगिता या कल्याण के शब्दों में सुधार को बताता है।

V. C से F तक का चलन बिना B को क्षति पहुँचाए A के कल्याण अथवा उपयोगिता में वृद्धि को प्रदर्शित करता है। C से E तक का चलन बिना A को क्षति पहुँचाए B के सन्तोष में वृद्धि को बताता है और E से J तक का चलन दोनों व्यक्तियों A तथा B के कल्याण में वृद्धि को निरूपित करता है

vi इसी प्रकार SCT के अन्दर कोई भी पेरीटो की दृष्टि से कल्याण में सुधार को बताता है परन्तु इस भाग में (अर्थात SCT) के बाहर कोई भी चलन पेरीटो सुधार नहीं है।

इस प्रकार सिद्धान्त की अनेक मान्यताएँ हैं जो निम्नलिखित हैं पेरीटो का कल्याणवादी अर्थशास्त्र का विवेचना इन्हीं मान्यताओं पर आधारित है

1. उपयोगिता के गुण वाचक विचार की अपेक्षा उपयोगिता के क्रमवाचक विचार को स्वीकार किया है।
2. कल्याणवादी अर्थशास्त्र को नैतिक निर्णयों से स्वतंत्र करने हेतु उपयोगिता की अन्तः वैयक्तिक तुलना की सम्भावना को अमान्य कर दिया है।
3. उपयोगिता को वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा पर निर्भर माना है।
4. वितरण की समस्याओं को सम्मिलित करने की अपेक्षा केवल उत्पादन —

Scanned by CamScanner

एवं वितरण की कुशलता को भी सम्मिलित किया गया है।

इस प्रकार इन मान्यताओं के आधार पर पेरीशियन कसौटी की अनेक आलोचनाएँ हुई जो निम्नलिखित है

1. नैतिक निर्णय से स्वतंत्रता नहीं — पेरीशियन कसौटी नैतिक निर्णयों से स्वतंत्र नहीं है जैसा की पेरीटो का दावा है। वस्तुतः पेरीशियन कसौटी भी एक विशेष नैतिक मान्यता पर आधारित है यह नैतिक मान्यता है " यह एक अच्छी बात है बिना दूसरों को हानि पहुँचाए किसी एक व्यक्ति की स्थिति में सुधार हो" इस प्रकार पेरीशियन कसौटी भी नैतिक निर्णयों से मुक्त नहीं है। इस लिए आधुनिक अर्थशास्त्री जैसे बर्गसन, सैमुलसन आदि का मत है कि अर्थपूर्ण कल्याणवादी अर्थशास्त्र के लिए नैतिक निर्णयों को शामिल करना आवश्यक है।

2. सापेक्ष आय — पेरीटो का यह मान्यता गलत है कि किसी व्यक्ति के कल्याण पर इस तथ्य का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है कि उसके पड़ोसी की आय में वृद्धि हो गयी है मिल का कथन है कि लोग अमीर होना नहीं चाहते अर्थात दूसरों के धन के प्रति ईर्ष्यालु होते हैं और यदि दूसरे व्यक्ति की आय में वृद्धि होती है तो उन्हें दुख का अनुभव होता है भले ही उनकी आय में कमी न हुई हो। उदाहरण के लिए कॉलेज के किसी प्राध्यापक के वेतन में कोई कमी न होते हुए भी उनकी सहयोगी के वेतन में वृद्धि कर दी जाय तो जिस प्राध्यापक का वेतन पूर्ववत ही है उसे अवश्य ही असंतोष होगा। अतः हम कह सकते हैं कि एक व्यक्ति का कल्याण उसे प्राप्त कुल वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा पर निर्भर होने के अतिरिक्त इस बात पर निर्भर होता है कि अन्य व्यक्तियों को प्राप्त वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा में वृद्धि हो गयी है अथवा कमी हो गई है।

3. वितरण की स्थिरता — पेरीटो दशा में आय के वितरण को अपरिवर्तनीय मान लिया जाता है अर्थात साधनों के पुर्नवरण के पश्चात आय वितरण को अपरिवर्तनीय मान लिया जाता है जो सम्भव नहीं है।

4. अनुकूलतम वितरण की विधि अज्ञात — पेरीटो की दशा के अन्तर्गत यह नहीं बतलाया गया है कि अनुकूलतम आय वितरण को कैसे प्राप्त किया जाय उसकी माप क्या हो।

5. अवास्तविक मान्यता — पेरीटो कसौटी में उत्पादन फलन की मान्यता अवास्तविक है क्योंकि उत्पादन तकनीक में समय-समय पर परिवर्तन होते रहते है।

6. प्राप्ति में कठिनता — पेरीटो अनुकूलता की सभी दशाओं की एक साथ प्राप्ति अत्यन्त कठिन है क्योंकि अर्थव्यवस्था में अनेक जटिलताएँ होती है

7. इकाई के कल्याण में वृद्धि में बिना किसी दूसरे इकाई के कल्याण में कमी संभव नहीं — पेरीटो के अनुकूलतम दशा के अन्तर्गत यह मान लिया जाता है कि समाज के एक इकाई के कल्याण को दूसरे के कल्याण से

बिना कमी किए बढ़ाना संभव है क्योंकि वास्तव में संभव नहीं है दूसरे व्यक्तियों के कल्याण में कमी लाना आवश्यक है।

8. साधनों की पूर्ण प्रतियोगिता तथा पूर्ण गतिशीलता की अनुचित मान्यता — पूर्ण प्रतियोगिता तथा साधनों की पूर्ण गतिशीलता की मान्यता उचित नहीं है क्योंकि अनेक आर्थिक तथा सामाजिक कारणों से गतिशीलता का अंश विद्यमान होता है।

9. उपयोगिता फलन स्वतंत्र नहीं — पेरिटो यह मानकर चलते है कि उपयोगिता फलन एक दूसरे से स्वतंत्र होते हैं अर्थात् एक उपभोक्ता के उपयोगिता फलन में परिवर्तन का कोई प्रभाव दूसरे पर नहीं पड़ता जो सम्भव नहीं है। उपयोगिता फलन एक दूसरे से अवश्य प्रभावित होते हैं तथा यदि उन्हें एक दूसरे से प्रभावित होता हुआ मान ले तो यह भी दिखलाया जा सकता है कि पेरीटो दशा लागू नहीं होगा ठीक यही निष्कर्ष उत्पादन क्षेत्र से संबंधित फर्मों के लिए लागू किया जा सकता है।

इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि पेरीटो का सिद्धान्त कल्याण की माप व अन्तर व्यक्तिगत तुलनाओं की कठिनाइयों से मुक्त है परन्तु वास्तविक संसार में आर्थिक नीति के क्षेत्र में अधिकांश परिवर्तन के फलस्वरूप कुछ लोगों के कल्याण में कमी तथा व दूसरे लोगों के कल्याण में वृद्धि होने के कारण विभिन्न व्यक्तियों द्वारा अथवा व्यक्तियों के भिन्न वर्गों की कल्याण की तुलनाएँ करने की आवश्यकता होती है। काल्डोर, हिक्स, अथवा साइटोवस्की जैसे अर्थशास्त्रियों ने क्षतिपूरण भुगतान नामक सिद्धान्त का प्रतिपादन कर के पेरीटो के धारणा की इस त्रुटि को दूर करने का प्रयास किया है।